धागेः सुसमाचार और व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार

अनन्तता की अनिवार्यता

डॉ. डेविड प्लैट

यदि आपके पास बाइबल है और मेरी आशा है कि आपके पास है तो मेरे साथ रोमियों 6 निकालें। यह सुसमाचार और व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार के धागों की इस छोटी श्रंखला का अन्तिम सन्देश है। व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार सरल है। यह वास्तव में सरल है। यह आसान नहीं है। शत्रु हमें किसी भी तरह सुसमाचार का प्रचार करने से रोकने का प्रयास करेगा। शत्रु को इससे कोई परेशानी नहीं है जब हम एक कमरे में एकत्रित होते हैं, जिसे हम "कलीसिया जाना" कहते हैं, और इस तरह गीत गाते हैं जैसे कि हम कलीसिया हैं। इससे उसे कोई समस्या नहीं है। परन्तु जब हम बाहर निकलकर कलीसिया के समान बोलते हैं, तो उसे समस्या हो जाती है, और इसके वह बिल्कुल विरूद्ध है। इसलिए यह आसान नहीं परन्तु सरल है। यही हम देख रहे हैं। सुसमाचार के ये धागे हमारे प्रतिदिन के वार्तालापों में कैसे व्याप्त होते हैं?

हम इस पाँचवें धागे हो देखने जा रहे हैं और फिर हम उन सब पर एक साथ एक नजर डालेंगे और मैं चाहता हूँ हम इस पाँचवें धागे में देखें कि सुसमाचार इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

इस समय हम चार धागों को देख चुके हैं। जब परमेश्वर के चरित्र की बात आती है, हमने कहा कि परमेश्वर सारी वस्तुओं का धर्मी और अनुग्रहकारी सृष्टिकर्ता है।

जब मनुष्य के पाप की बात आती है तो हमने रोमियों 1–8 में देखा कि हम सबको परमेश्वर ने बनाया है परन्तु हम सब पाप के कारण भ्रष्ट हो गए हैं। ये दोनों हमें मसीह की पर्याप्तता की ओर ले जाते हैं, कि केवल यीशु ही हमारे पाप को हटाने और परमेश्वर के साथ हमारा मेल कराने के, हमें परमेश्वर के निकट लाने के योग्य है। अब यह हमारे दिलों की वास्तविकता कैसे बनता है? मसीह का कार्य, मसीह का जीवन, उसकी मृत्यु, उसका पुनरूत्थान, यह हमारे उद्धार में कैसे कार्य करते हैं? यह विश्वास की अनिवार्यता की ओर लाता है। परमेश्वर के साथ हमारा मेल केवल यीशु पर विश्वास के द्वारा होता है, केवल विश्वास के द्वारा।

धागा #5: अनन्तता की अनिवार्यता

हमारी अनन्त नियति यीशु के प्रति हमारे प्रत्युत्तर पर निर्भर है।

यह सब इस अन्तिम धागे की ओर लाता है, पाँचवाँ धागा, अनन्तता की अनिवार्यता। इसी कारण यह समाचार, यह सुसमाचार, इतना महत्वपूर्ण है और इसे हमारे जीवनों में बुनना महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारी अनन्त नियति यीशु के प्रति हमारे प्रत्युत्तर पर निर्भर है।

सुसमाचार महत्वपूर्ण है क्योंकि अनन्तता सदा के लिए है, और मसीह तथा सुसमाचार के प्रति हमारा प्रत्युत्तर निर्धारित करता है कि हम सदा के लिए कहाँ रहेंगे– हम अनन्तकाल तक कहाँ रहेंगे। यह इन सारे धागों के दाँव को उठा देता है।

अब यह रोमियों 1–8 में हर जगह है। आरम्भ में, रोमियों 1:18–20, वह परमेश्वर की अनन्त सामर्थ के बारे में बात कर रहा है। रोमियों 2 में हम परमेश्वर के न्याय की तस्वीर को देखते हैं। हम इसे पहले ही देख चुके हैं। यह अनन्त न्याय है। यद्यपि हमने जो देखा है उसके आधार पर मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि जब प्रत्युत्तर की बात आती है तो विकल्प क्या हैं। हम पहले ही जो देख चुके हैं उसके आधार पर हमारे सामने कौन से दो विकल्प हैं और फिर मैं आपको दिखाना चाहता हूँ कि कैसे रोमियों 1–8 इन विकल्पों को लेकर अनन्तता के संबंध में दाँव को ऊँचा उठाता है।

दो विकल्प ये हैं: क्या आप यीशु से मुँह मोड़ लेंगे या आप यीशु की ओर मुड़ेंगे? यह वहाँ से शुरू हो रहा है जहाँ हमने पिछले प्रचार में छोड़ा था। हमने मुड़ने और भरोसा करने के बारे में बात की और अन्तिम सवाल जिसके साथ सुसमाचार हमारा सामना करता है वह है, क्या आप यीशु से मुँह मोड़ लेंगे या यीशु की ओर मुड़ेंगे? इस ग्रह पर प्रत्येक व्यक्ति, सम्पूर्ण इतिहास में प्रत्येक व्यक्ति इन दो विकल्पों का सामना करता है, यीशु से मुँह मोड़ना या यीशु की ओर मुड़ना और हम में से प्रत्येक का अनन्त काल इस पर निर्भर है कि हम इन विकल्पों का प्रत्युत्तर कैसे देते हैं। जीवन और मृत्यु का सवाल है और इसके बीच का कोई विकल्प नहीं है।

रोमियों 1–4 इसके बारे में बात करता है परन्तु मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ रोमियों 5 पर चलें। मेरे साथ पद 9 को देखें। मैं आपको प्रोत्साहि करना चाहता हूँ कि आप अपना पेन या पेन्सिल उठाएँ और मैं चाहता हूँ कि जहाँ भी आपको "जीवन" या

"जीना" और "मृत्यु" या "मरना" जैसे शब्द दिखाई दें तो आप उन्हें रेखांकित करें। मेरे साथ रोमियों 5:9 से आरम्भ करें।

"अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे? केवल यही नहीं, परन्तु हम अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा, जिसके द्वारा हमारा मेल हुआ है, परमेश्वर में आनन्दित होते हैं। इसलिए जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया। व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परन्तु जहाँ व्यवस्था नहीं वहाँ पाप गिना नहीं जाता। तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आने वाले का चिन्ह है, के अपराध के समान पाप न किया।" (रोमियों 5:12–14).

आप पद 16 पर आएँ। पद 16, *"जैसा एक मनुष्य के पाप करने का फल हुआ, वैसा ही दान की दशा नहीं, क्योंकि एक ही के कारण दण्ड की आज्ञा का फैसला हुआ, परन्तु बहुत से अपराधों के कारण ऐसा वरदान उत्पन्न हुआ कि लोग धर्मी ठहरे। क्योंकि जब एक मनुष्य के अपराध के कारण मृत्यु ने उस एक ही के द्वारा राज्य किया, तो जो लोग अनुग्रह और धर्मरूपी वरदान बहुतायत से पाते हैं वे एक मनुष्य के, अर्थात् यीशु मसीह के द्वारा अवश्य ही अनन्त जीवन में राज्य करेंगे।* (रोमियों 5:16–17). वह आदम/यीशु की तुलना कर रहा है। *"इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दण्ड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी*

सब मनुष्यों के लिए जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ। क्योंकि जैसा एक मनुष्य के आज्ञा न मानने से बहुत से लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य के आज्ञा मानने से बहुत लोग धर्मी ठहरेंगे।" (रोमियों 5:18–19).

इस अध्याय को समाप्त करते हुए वह कहता है, *"व्यवस्था बीच में आ गई कि अपराध बहुत हो, परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ, कि जैसा पाप ने मृत्यु फैलाते हुए राज्य किया, वैसा ही हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवन के लिए धर्मी ठहराते हुए राज्य करे।"* (रोमियों 5:20–21).

फिर आप अध्याय 6 पर आएँ। मेरे साथ अध्याय 6 के पद 3 को देखें। *"क्या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।"* पद 5, *"क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएँगे।"* पद 8 पर आएँ,

> *इसलिए यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीएँगे भी। क्योंकि यह जानते हैं कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं; उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है तो परमेश्वर के लिए जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को*

पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो। इसलिए पाप तुम्हारे नश्वर शरीर में राज्य न करे, कि तुम उसकी लालसाओं के अधीन रहो; और न अपने अंगों को अधर्म के हथियार होने के लिए पाप को सौंपो, पर अपने आपको मरे हुओं में से जी उठा हुआ जानकर परमेश्वर को सौंपो, और अपने अंगों को धर्म के हथियार होने के लिए परमेश्वर को सौंपो। (रोमियों 6:8–13).

इस अध्याय के अन्त में आएँ, पद 19. यहाँ पर हम एक प्रकार से आधार तैयार करेंगे और इस परिच्छेद के अन्त में देखेंगे। पौलुस कहता है, *"मैं तुम्हारी शारीरिक दुर्बलता के कारण मनुष्यों की रीति पर कहता हूँ। जैसे तुम ने अपने अंगों को कुकर्म के लिए अशुद्धता और कुकर्म के दास करके सौंपा था, वैसे ही अब अपने अंगों को पवित्रता के लिए धर्म के दास करके सौंप दो। जब तुम पाप के दास थे, तो धर्म की ओर से स्वतंत्र थे। अतः जिन बातों से अब तुम लज्जित होते हो, उनसे उस समय तुम क्या फल पाते थे?* (रोमियों 6:19–21).

वह यह कह रहा है। तुम पाप के दास थे, इसका मतलब है, "उन बातों का परिणाम मृत्यु है।" पाप का परिणाम मृत्यु है। *"परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिससे पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।"* (रोमियों 6:21–23).

आप अध्याय 7 में आएँ। मैं आपको केवल यह दिखाना चाहता हूँ कि ये दोनों किस तरह आपस में बुने हुए हैं। अध्याय 7 पर आएँ; मेरे साथ पद 8 को देखें। पौलुस कहता है,

परन्तु पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझ में सब प्रकार का लालच उत्पन्न किया, क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मुर्दा है। मैं तो व्यवस्था बिना पहले जीवित था, परन्तु जब आज्ञा आई, तो पाप जी गया, और मैं मर गया। और वही आज्ञा जो जीवन के लिए थी, मेरे लिए मृत्यु का कारण ठहरी। क्योंकि पाप ने अवसर पाकर आज्ञा के द्वारा मुझे बहकाया, और उसी के द्वारा मुझे मार भी डाला। इसलिए व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है। तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे लिए मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिए मृत्यु का उत्पन्न करने वाला हुआ कि उसका पाप होना प्रकट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे। (रोमियों 7:8–13).

आप इस अध्याय के अन्त में पद 24 पर पहुँचें, वह पुकारता है, *"मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद हो।"*

अब यह अध्याय 8, पद 2 में पहुँचता है। हम पद से आरम्भ करेंगे। *"अतः, अब जो मसीह यीशु में हैं, उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं। क्योंकि जीवन की आत्मा की व्यवस्था ने मसीह यीशु में मुझे पाप की और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतंत्र कर दिया।"* (रोमियों 8:1–2). फिर वह आगे बढ़ता है, नीचे पद 6 पर जाएँ। वह शारीरिक मनुष्य के मन और आत्मा के मन में तुलना कर रहा है। वह कहता है, *"शरीर पर मन लगाना तो मृत्यु है, परन्तु आत्मा पर मन लगाना जीवन और शान्ति है।"* वह इसे विस्तार से बताता है। आप पद 11 पर आएँ, *"यदि उसी का आत्मा*

जिसने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया, तुम में बसा हुआ है; तो जिसने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी नश्वर देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है, जिलाएगा। इसलिए हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं कि शरीर के अनुसार दिन काटें, क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।" (रोमियों 8:11–14).

आप इस अध्याय के अन्त में आएँ, पद 34, यह इसका सार है। वह कहता है, *"फिर कौन है जो दण्ड की आज्ञा देगा? मसीह ही है जो मर गया वरन् मुर्दों में से जी भी उठा, और परमेश्वर के दाहिनी ओर है, और हमारे लिए निवेदन भी करता है। कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार? जैसा लिखा है, तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होने वाली भेड़ों के समान गिने गए हैं। परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी बढ़कर हैं। क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएँ, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊँचाई, न गहराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।"* (रोमियों 8:34–39).

यहाँ रोमियों 5, 6, 7, 8 की पूरी तस्वीर है। हम जीवन और मृत्यु, जीवन और मृत्यु को देखते हैं। इन्हें अलग–अलग देखें और फिर एक साथ देखें, एक साथ मिलाकर संक्षेप में देखने का प्रयास करें कि पौलुस हमें जीवन और मृत्यु के बारे में क्या

दिखा रहा है जब बात मसीह की आती है क्योंकि यह सब मसीह पर टिका है। हमारे पास यहाँ दो विकल्प हैं। या आप यीशु से मुँह मोड़ लेंगे या यीशु की ओर मुड़ जायेंगे।

क्या आप यीशु से मुँह मोड़ लेंगे?

आइए पहले इसे देखते हैं। मैं पौलुस के शब्दों का प्रयोग करके वह जो कह रहा है उसे संक्षेप में बता रहा हूँ। पहला विकल्पः अब हम मसीह के बिना जीना चुन सकते हैं। आप यीशु से मुँह फेरें और कहें, "मैं मसीह के बिना जीऊँगा।" पौलुस की भाषा में पाप का दास बनके, अपने आप का दास बनके जीएँ। हम अपनी मर्जी से जीते हैं। शायद मौखिक रूप से, जान–बूझकर, शायद सबके सामने यीशु का तिरस्कार करते हैं। मैं यीशु से कोई संबंध नहीं रखना चाहता। हम ऐसा निर्णय लेते हैं।

या शायद यह इससे भी सूक्ष्म है। शायद हम कलीसिया में जाते हैं। शायद हम शामिल हैं। शायद हम विश्वास करते हैं कि यीशु क्रूस पर मरे और कब्र से जी उठे लेकिन हम कभी इस बिन्दू पर नहीं आए हैं जहाँ हमने यीशु को व्यक्तिगत रूप से अपने जीवन का प्रभु स्वीकार किया हो। हम अपने तरीके से जीवन बिताते हैं, पाप का दास बनकर जीते हैं, अपने आप का दास बनकर जीते हैं, यद्यपि नाम के लिए हम यीशु के अधीन हैं। सतही धर्म।

यह तस्वीर है। अब हम मसीह के बिना जीना चुनते हैं, चाहे यह जान–बूझकर हो या कलीसिया की सदस्यता के नीचे छिपा हो। यह एक विकल्प है। अब हम मसीह के बिना जीते हैं और इसका परिणाम यह है कि हम मसीह के बिना सदा के लिए

मर जायेंगे। पौलुस यही कह रहा है। पाप की मजदूरी मृत्यु है। पाप की मजदूरी मृत्यु है। रोमियों 2 में वह इसी का आधार तैयार करता है।

मेरे साथ वहाँ चलें। रोमियों 2, मैं इस परिच्छेद को पुनः आपके लिए पढ़ना चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि आप इन वचनों को सुनें। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ इस तस्वीर की कल्पना करें। रोमियों 2:5, देखें पवित्रशास्त्र वहाँ क्या कहता है। पौलुस इन शब्दों को लिखता है,

> *पर तू अपनी कठोरता और हठीले मन के कारण उसके क्रोध के दिन के लिए, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रकट होगा, अपने लिए क्रोध कमा रहा है। वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगाः जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा; पर जो विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते, वरन् अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा। और क्लेश और संकट हर एक मनुष्य के प्राण पर जो बुरा करता है आएगा, पहले यहूदी पर फिर यूनानी पर; परन्तु महिमा और आदर और कल्याण हर एक को मिलेगा, जो भला करता है, पहले यहूदी को फिर यूनानी को। क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता।* (रोमियों 2:5–11).

दूसरी बातों के साथ, यह परिच्छेद स्पष्ट रूप से सिखाता है कि मृत्यु के बाद दो विकल्प हैं। मृत्यु के पश्चात् या तो अनन्त जीवन, महिमा, और आदर, और शान्ति है, या अनन्त क्रोध और कोप और परेशानी और निराशा है।

रोमियों की पुस्तक इस यथार्थ को हमारे सामने रखती हैः इस प्रचार को सुनने वाला प्रत्येक व्यक्ति, और यह इसके समाप्त होने से पहले भी हो सकता है, आप इन दोनों विकल्पों में से एक की ओर धकेले जा सकते हैं, हमेशा के लिए अनन्त जीवन और महिमा और आदर और शान्ति की ओर या अनन्त क्रोध और कोप और परेशानी और निराशा की ओर धकेले जा सकते हैं, जहाँ से कोई वापसी नहीं होगी।

यह क्या कह रहा है? पद 6, यह क्या कह रहा है कि हमारे न्याय किस के अनुसार होगा? हमने जो किया है उसके अनुसार हमारा न्याय होगा। हम कहते हैं, "तो ठीक है, तो फिर हमें कार्य शुरू करने की जरूरत है। उस दिन ठीक रहने के लिए मैं जितना अधिक कर सकता हूँ मुझे उतना करने की जरूरत है।" यह रोमियों के सम्पूर्ण बिन्दू से चूक जाता है।

रोमियों का सम्पूर्ण बिन्दू है कि आप इसे नहीं कर सकते हैं। कौन यह सोचने का साहस कर सकता है कि एक वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर के सामने खड़ा होगा, उसके सामने जिसे तुमने अपने पाप के द्वारा अनन्त रूप से ठेस पहुँचाई है, और उसकी ओर देखकर कहेगा, "लेकिन इन सारे अच्छे कामों को देखो जो मैं ने किए हैं। मैं अनन्त जीवन का हकदार हूँ।" कौन यह कहेगा? मैं आपसे अनुरोध करता हूँ आप यह न सोचें कि आप ऐसा कहेंगे। पौलुस कहता है, यदि अब तुम मसीह के बिना जीते हो; तो तुम सदा के लिए मसीह के बिना मरोगे क्योंकि यथार्थ यह है कि केवल एक है जिसने पिता के सामने पर्याप्त कार्य किया है। केवल एक ही है जो परमेश्वर के सामने सही है। वह यीशु है। इसी कारण, केवल वही हमारे पाप को हटाने और परमेश्वर के साथ हमारे मेल कराने के योग्य है क्योंकि उसके जीवन ने परमेश्वर की धार्मिकता को प्रदर्शित किया।

अतः यदि केवल एक ही व्यक्ति आपके ऊपर आने वाले परमेश्वर के दण्ड को आपकी खातिर अपने ऊपर लेने में सक्षम है, और यदि केवल वही ऐसा करने में सक्षम है और इस जीवन में आप कहते हैं, "मैं उसे नहीं चाहता, तो उस दिन आप परमेश्वर के सामने अकेले खड़े होंगे और आपको हमेशा, हमेशा के लिए आग की झील में डाल दिया जाएगा।"

आप कहेंगे, "क्या? तुम वास्तव में इसे मानते हो?" बाइबल को देखें। यीशु को देखें। यीशु को देखें, मत्ती 10:28, *"जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उनसे मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नष्ट कर सकता है।"* आपकी आत्मा और शरीर को "नरक में" कौन नष्ट कर सकता है? मरकुस 9:43, देखें यीशु क्या कहते हैं, *"यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। टुण्डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक की आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं। यदि तेरा पाँव तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो पाँव रहते हुए नरक में डाला जाए। यदि तेरी आँख तुझे ठोकर खिलाए तो उसे निकाल डाल। काना होकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना तेरे लिए इससे भला है कि दो आँख रहते हुए तू नरक में डाला जाए। जहाँ उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती।"*

यह यीशु है। 2 थिस्सलुनीकियों 1:7 कहता है, यीशु *"अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रकट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने*

से और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएँगे।" (2 थिस्सलुनीकियों 1:7–9). प्रकाशितवाक्य 14:11, यही वह लेखक है जिसने हमें यूहन्ना 3:16 दिया है– *"परमेश्वर ने जगत से इतना प्रेम किया..."* प्रकाशितवाक्य 14:11, वह उनके बारे में बताता है जो नरक में पड़े हैं और कहता है, *"... उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा, और ... उनको रात दिन चैन न मिलेगा।"* प्रकाशितवाक्य 20:15, *"और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।"* पद 10 कहता है, *"उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा।"* (प्रकाशितवाक्य 14:11). यह यूनानी भाषा में अनन्त समय के लिए प्रयुक्त सबसे कठोर शब्द है।

लोग कहते हैं, "क्या तुम वास्तव में इसे अक्षरशः मानते हो? क्या यह प्रतीकात्मक भाषा नहीं है?" यदि यह प्रतीकात्मक भी है, तो यह किस का प्रतीक है? उस यथार्थ का जिसके साथ पवित्रशास्त्र हमारा सामना करता है कि इस जीवन के अन्त में, मृत्यु के समय, एक सड़क है जो अनन्त आनन्द की ओर ले जाती है और एक सड़क है जो अनन्त और सदा के कष्ट की ओर ले जाती है। आप किस सड़क पर हैं?

बहुत से लोग कहते हैं कि हमें इन सबके बारे में बात नहीं करनी चाहिए। बहुत से प्रचारक कहेंगे, "उसके बारे में बात मत करो।" यहाँ तक कि ऐसे लोग जिनका मैं सम्मान करता हूँ, अत्यधिक आदर करता हूँ, वे भी इनके बारे में क्षमा माँगने के स्वर में बात करते हैं, इस तरह से कहते हैं, "मुझे खेद है कि मुझे यह बताना पड़ रहा है, लेकिन चूंकि यह बाइबल में है इसलिए मुझे इस पर प्रचार करना ही है।" इसका कोई मतलब नहीं है। इसके बारे में सोचें। यदि वास्तव में परमेश्वर है, यदि स्वर्ग

वास्तव में है और नरक वास्तव में है, यदि अनन्त आनन्द का एक स्थान है और यदि अनन्त कष्ट का एक स्थान है तो क्या मेरे लिए यह कहना सही होगा कि "मैं आपको यह बताना तो नहीं चाहता कि अनन्त क्रोध आ रहा है परन्तु चूंकि मेरे पास ओर कोई चारा नहीं है इसलिए मैं आपको इसकी चेतावनी देकर आगे बढ़ जाऊँगा?" नहीं, नहीं मैं अपनी पूरी ताकत से आपसे अनुरोध करूँगा कि आप मसीह से मुँह न मोड़ें, मसीह की ओर मुड़ें।

मैं हर बच्चे से अनुरोध करूँगा। आपको यह बहुत दूर लग सकता है क्योंकि आप युवा हैं। लेकिन यथार्थ यह है कि 8 वर्ष या 18 वर्ष या 88 वर्ष की आयु में भी आपकी मृत्यु हो सकती है। आप नहीं जानते हैं। और आप या तो अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे या अनन्त मृत्यु और अनन्त कष्ट में प्रवेश करेंगे और आपको उससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को आपकी खातिर मरने के लिए भेजा है। इसलिए मैं प्रत्येक बालक से अनुरोध करूँगा, यीशु की ओर मुड़ो। अब यीशु से अपना मुँह न मोड़ो। यीशु की ओर मुड़ो।

शैतान प्रत्येक छात्र, प्रत्येक किशोर के मन को सारी वस्तुओं और सारी मस्ती और टीवी कार्यक्रमों और विडियोगेम और फिल्मों और फेसबुक और मनोरंजन से भर देना चाहता है क्योंकि वह चाहता है कि आप इन सारी बातों इतने व्यस्त हो जाएँ कि आपको पता ही न रहे कि एक अनन्तकाल आ रहा है, अनन्त क्रोध या अनन्त जीवन आ रहा है, और इन में से किसी भी बात का अनन्त काल में कोई महत्व नहीं होगा। और मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि आप यीशु से मुँह न मोड़ें, यीशु की ओर मुड़ें। प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा करें। अस्थाई को किनारे कर दें।

मैं प्रत्येक अविवाहित पुरूष और स्त्री, प्रत्येक विवाहित पुरूष और स्त्री से अनुरोध करूँगा कि अपने व्यापार और अपने पेशे और अर्थव्यवस्था और संघर्षों और शेयरों और खेलों तथा अपने कम्प्यूटर के पीछे से बाहर निकलें और यथार्थ को देखें, अनन्त यथार्थ को जो आपकी प्रतीक्षा में है। यह अनन्त क्रोध और अनन्त जीवन है। क्या आप उसके लिए तैयार हैं?

प्रत्येक बुजुर्ग पुरूष और स्त्री मैं अनुरोध करूँगा कि अगले पल का इन्तजार न करें, एक और मिनट की देरी न करें। अपने हृदय यीशु की ओर मोड़ें। इसी समय हर व्यक्ति अपने हृदय में यीशु की ओर मुड़े। यीशु की ओर मुड़ें। प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा करें जिसने परमेश्वर के क्रोध को अपने ऊपर ले लिया जो आपके ऊपर आना था और जिसने पुरूत्थान में पाप के ऊपर परमेश्वर की सामर्थ दिखाई और यह सब उसने आपके उद्धार के लिए किया है। उसकी ओर मुड़ें, और यदि नहीं, यदि आप उसकी ओर नहीं मुड़ते हैं, यदि आप यहाँ यीशु के बिना जीते हैं, तो हम हमेशा के लिए यीशु के बिना मर जायेंगे।

या क्या आप यीशु की ओर मुड़ेंगे?

क्या आप यीशु की ओर मुड़ेंगे? जब आप यीशु की ओर मुड़ते हैं तो क्या होता है? जब पुनः जन्म पाते हैं और यह सुसमाचार आपके हृदयों में वास्तविकता बनता है? पौलुस के शब्दों में, हम मसीह के साथ मरते हैं। आप कहेंगे, "तुम्हारा क्या मतलब है, हम मसीह के साथ मरते हैं?" इसका मतलब है हम मसीह के साथ उसकी मृत्यु में सहभागी होते हैं। गलातियों 2:20 में पौलुस कहता है, *"हम मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाते हैं।"* हम अपने पाप के लिए मरते हैं। हम अपने आप के लिए मरते

हैं। हम इसे अपने बल पर करने का प्रयास करना बन्द कर देते हैं। हम वहाँ पहुँचने का प्रयास करना बन्द कर देते हैं। हम धर्म का निर्माण करने, परमेश्वर के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयास करना बन्द कर देते हैं। हम अपने प्रत्येक प्रयास के लिए, अपने घमण्ड के लिए मरते हैं। हम पाप के लिए मरते हैं। यहाँ हम मसीह के साथ मरते हैं, पाप से मुड़ते हैं, स्वयं से मुड़ते हैं और प्रभु तथा उद्धारकर्ता के रूप में उस पर भरोसा करते हैं।

अब हम मसीह के साथ मरते हैं और पौलुस कहता है हम सदा के लिए मसीह के साथ जीएँगे, सदा के लिए मसीह के साथ रहेंगे। यदि आप सहभागी हैं, यदि आप मसीह के साथ उसकी मृत्यु में सहभागी हैं, पौलुस कहता है, तो हम निश्चित रूप से उसके पुनरूत्थान में भी सहभागी होंगे। परमेश्वर की स्तुति हो, परमेश्वर की स्तुति हो कि अब जब हम मसीह के साथ मरते हैं तो हम सदा के लिए मसीह के साथ जीएँगे। यह सुसमाचार है।

सुसमाचार के धागों को सीलना...

परमेश्वर सारी वस्तुओं का धर्मी और अनुग्रहकारी सृष्टिकर्ता है।

हम सब को परमेश्वर ने बनाया है, परन्तु हम सब पाप के कारण भ्रष्ट हो गए हैं।

केवल यीशु ही हमारे पाप को हटाने और परमेश्वर के साथ हमारा मेल कराने में सक्षम है।

केवल यीशु पर विश्वास के द्वारा ही परमेश्वर के साथ हमारा मेल होता है।

हमारी अनन्त नियति यीशु के प्रति हमारे प्रत्युत्तर पर निर्भर है।

यहाँ पर मैं इन धागों को सीलते हुए सीधे व्यवहारिक प्रयोग की ओर बढ़ना चाहता हूँ। अनन्तता की अनिवार्यता, हमारी अनन्तता यीशु के प्रति हमारे प्रत्युत्तर पर निर्भर है, हमारी अनन्तता इस पर निर्भर है। हम इन धागों को देख चुके हैं। परमेश्वर सारी वस्तुओं का धर्मी और अनुग्रहकारी सृष्टिकर्ता है। हमें परमेश्वर ने बनाया है परन्तु पाप के कारण हम भ्रष्ट हो गए हैं। यीशु हमारे पाप को हटाता है। केवल वही हमारे पाप को हटाने और परमेश्वर के साथ हमारा मेल कराने में सक्षम है। यीशु पर विश्वास के द्वारा हमारा उससे मेल होता है और हमारी अनन्त नियति इस पर निर्भर है। अतः मैं इस अन्तिम धागे को लेकर व्यवहारिक रूप से सोचना चाहता हूँ कि हम इस धागे को कैसे बाँटते हैं और कैसे यह व्यवहारिक रूप से इन सारे धागों को प्रभावित करता है।

अस्थाई वस्तुओं के बारे में अपनी बातचीत को न्यूनतम करें

पहला, अस्थाई वस्तुओं के बारे में अपनी बातचीत को न्यूनतम करें। हम अस्थाई से भरे हैं। आप अपने अधिकाँश वार्तालापों को देखें, वे अस्थाई से भरे हैं, उन बातों से जो शायद एक पल के लिए, एक दिन के लिए, एक साल के लिए महत्वपूर्ण होंगी। परन्तु अनन्तकाल के लिए उनका कोई महत्व नहीं है। आप सोंचे कितनी अधिक हमारी बातचीत मौसम, भोजन, खेलों के बारे में होती है। परमेश्वर हमें इस सोच से छुटकारा दे कि ये महत्वपूर्ण हैं। इनका कोई महत्व नहीं है। जीवन को पाएँ। अनन्त जीवन को पाएँ। यदि आपकी टीम दूसरी टीम से जीत जाती है तो इसका अनन्त काल के लिए क्या महत्व है? कौन परवाह करता है? लोगों के जीवन अनन्तता के लिए दाँव पर लगे हैं। यह 2 कुरिन्थियों 4:4–6 है। इस संसार का ईश्वर यह कहते हुए अविश्वासियों के मनों को अन्धा कर रहा है कि अस्थाई महत्वपूर्ण है, अस्थाई महत्वपूर्ण है, और हम विरोधी को तृप्त कर रहे हैं। हम यह कहकर विरोधी की

योजना को पूरा कर रहे हैं, कि, "हाँ, ये बातें महत्वपूर्ण हैं, आओ इनके बारे में बात करें। आओ हम इस तथ्य को अनदेखा कर दें कि एक दिन आपको या मुझे परमेश्वर का सामना करना होगा और हम स्वर्ग में या नरक में जायेंगे।" यदि यह सत्य है, तो यह हमारे बात करने के तरीके को और हमारी बातचीत के विषय को पूर्णतः बदल देता है।

अनन्त वस्तुओं के बारे में अपने वार्तालापों को अधिकतम करें।

अस्थाई वस्तुओं के बारे में वार्तालापों को न्यूनतम करें और अनन्त वस्तुओं के बारे में अपने वार्तालापों को अधिकतम करें। जो महत्वपूर्ण है उसके बारे में बात करें। सतह से नीचे जाएँ। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको सदैव गहरा धर्मविज्ञानी चिन्तक या बातचीत करने वाला बनना है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि आपको लोगों को ऊबाना है, कभी आनन्द नहीं मनाना है। परन्तु यह इस श्रंखला का सम्पूर्ण बिन्दू है। हम दैनिक वार्तालापों को लेकर, इस संसार की प्रतिदिन की बातों को लेकर, किस प्रकार अनन्त वास्तविकताओं का संकेत दे सकते हैं? मैं आपको चुनौती देता हूँ इस सप्ताह जब आप कार चलाते हैं या जब अपने बिस्तर पर होते हैं तो उन वार्तालापों के बारे में सोचें जो आपने उस दिन किए, उन वार्तालापों के बारे में सोचें और सोचें कि "मैं ऐसी कौन सी बात की जिसका कोई महत्व नहीं था और मैं ने कौन सी बात की जो अनन्तकाल के लिए थी? कहाँ मैं ने अपनी साँस अस्थाई के लिए व्यर्थ गँवाई और कहाँ मैं ने अनन्त के बारे में बातें की?" घटनाओं, परिस्थितियों, अवस्थाओं के बारे में अनन्त दृष्टिकोण को व्यक्त करने के अवसरों की खोज में रहें।

जब आपको अहसास होता है कि लोग अगले खरबों वर्ष स्वर्ग या नरक में रहेंगे तो यह लोगों से आपके बात करने के तरीके को, लोगों का ईमेल और सन्देश भेजने

के तरीके को बदल देता है। यह संवाद को बदल देता है। अनन्त वस्तुओं के बारे में बात करें।

सुसमाचार का प्रत्युत्तर देने के बारे में बात करना...

अब सुसमाचार का प्रत्युत्तर देने के बारे में बात करना। मेरे साथ प्रेरितों के काम 26 पर आएँ। एक पुस्तक पीछे आएँ। मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ, प्रेरितों के काम 26. इस श्रंखला का मुख्य बिन्दू सुसमाचार धागों को बुनने के बारे में बात करना रहा है, यहाँ और वहाँ के इस धागे को और आशा है, याद रखें कि लक्ष्य केवल यहाँ और वहाँ कोई शब्द कहना नहीं है, परन्तु लक्ष्य प्रार्थना करना और इन सारे धागों को एक साथ मिलाने के अवसरों की खोज में रहना और यह देखना है कि पहली बार किसी सहयोगी, किसी मित्र, किसी पड़ोसी, किसी पारिवारिक सदस्य की आँखें सुसमाचार के सत्य को देखें और कहें, "हाँ, मैं इसे देख रहा हूँ, मैं परमेश्वर और मनुष्य और मसीह और मसीह के लिए अपनी आवश्यकता को, अपने विश्वास को, अनन्त काल को देख रहा हूँ।" यह सम्पूर्ण तस्वीर उनकी नजरों के सामने खुल जाती है। मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ प्रेरितों के काम 26 को देखें। मेरे साथ पद 15 देखें। मैं चाहता हूँ आप इस वाक्यांश को देखें।

पौलुस अग्रिप्पा से बात कर रहा है और वह उस कार्य को याद कर रहा है जो मसीह ने उसके जीवन में किया है। वह मूलतः अपनी गवाही बता रहा है और मैं चाहता हूँ आप इसे सुनें। वह कहता है, *"मैं ने कहा, 'हे प्रभु, तू कौन है?' प्रभु ने कहा, 'मैं यीशु हूँ, जिसे तू सताता है। परन्तु तू उठ, अपने पाँवों पर खड़ा हो; क्योंकि मैं ने तुझे इसलिए दर्शन दिया है कि तुझे उन बातों का भी सेवक और गवाह ठहराऊँ, जो तू ने देखी हैं, और उनका भी जिनके लिए मैं तुझे दर्शन दूँगा।*

और मैं तुझे तेरे लोगों से और अन्यजातियों से बचाता रहूँगा।" (रोमियों 26:15–17). इस वाक्यांश को देखें। *"जिनके पास मैं अब तुझे भेजता हूँ।"* यीशु पौलुस से कह रहे हैं, *"जिनके पास मैं अब तुझे इसलिए भेजता हूँ कि तू उनकी आँखें खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएँ।"* क्या यह अतुल्य नहीं है? परमेश्वर कह रहा है, "पौलुस तू जाएगा, तू जाकर उनकी आँखें खोलेगा और वे अंधकार से ज्योति की ओर आएँगे क्योंकि तू उनकी आँखें खोलेगा। वे शैतान की सामर्थ से परमेश्वर की सामर्थ की ओर आएँगे। तू उनकी आँखों को खोलेगा।"

अब हम जानते हैं, इस पूरी श्रंखला में हम सुसमाचार को देखते रह हैं, कि केवल परमेश्वर ही यह कर सकता है। आप इसे नहीं बना सकते हैं। ऐसा नहीं है कि आप किसी के पास जाकर कहें, "खुल जा," और ऐसा हो जाए। यह इस प्रकार नहीं होता है। परन्तु परमेश्वर आँखों को कैसे खोलता है? आपके मुँह के द्वारा; आप सुसमाचार सुनाते हैं, वह आँखों को खोलता है। आत्मा इसी प्रकार कार्य करता है, सुसमाचार की घोषणा के द्वारा। आप सुसमाचार सुनाएँ। परमेश्वर सारी वस्तुओं का धर्मी और अनुग्रहकारी सृष्टिकर्ता है। केवल यीशु ही हमारे पापों को हटाने और परमेश्वर के साथ हमारा मेल कराने में सक्षम है। हम सुसमाचार सुनाते हैं और वहाँ सामर्थ है। परमेश्वर इसी तरह आँखों को खोल रहा है। इसके बारे में आप इससे अधिक और क्या कह सकते हैं कि जब ये शब्द बाहर निकलते हैं तो आप जानते हैं कि आपके द्वारा कहे जाने वाले इन शब्दों में किसी के जीवन को अनन्त काल के लिए बदल देने की अलौकिक सामर्थ है? क्या इसके अलावा कुछ और है जिसके बारे में आप दोपहर के भोजन के दौरान बात कर सकते हैं? कितना अद्‌भुत विचार

है? आप इसे बोलते हैं और यह सामर्थ के समान है और यह जीवनों को खोलता है। लोगों के जीवन बदल रहे हैं। कैसी आश्चर्यजनक तस्वीर है।

खूबसूरती यह है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति जो मसीह को जानता है, हमारे अन्दर मसीह है, मसीह का आत्मा हमारे अन्दर है, और इस प्रकार हमें मसीह को दूसरों से परिचित कराने कराने का हिस्सा बनने का सौभाग्य प्राप्त है। और इसलिए मैं आपको सुसमाचार सुनाते समय, इन सबको एक साथ मिलाने के चार त्वरित तरीकों को बताता हूँ।

पहला, स्पष्ट रहें, स्पष्ट रहें। इसी कारण मैं ने आपको इन विभिन्न धागों को कंठस्थ करने की चुनौती और प्रोत्साहन देने का प्रयास किया है। इसका मतलब यह नहीं है कि लोग आपसे सवाल नहीं पूछेंगे। आप जिस व्यक्ति के साथ बात करते हैं उसके आधार पर आपको यहाँ–वहाँ कुछ बातों को समझाने की आवश्यकता पड़ सकती है। परन्तु स्पष्ट रहें। इसी कारण मैं चाहता हूँ कि हम अपने मन में सुसमाचार के प्रति स्पष्ट रहें और अपने मुँह में सुसमाचार के प्रति स्पष्ट रहें। यदि हम स्पष्ट नहीं है तो हम इससे चूक जायेंगे। हमें अपने मन में सुसमाचार के प्रति स्पष्ट रहना है और अपने मुँह में सुसमाचार के साथ स्पष्ट रहना है और उसके आधार पर मैं आपको सुसमाचार की सामर्थ पर भरोसा रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहता हूँ।

कृपया मेरी बात सुनें। आपको इसे बदलने की आवश्यकता नहीं है। आपको इसे इस व्यक्ति या उस व्यक्ति या इस परिस्थिति तथा उस परिस्थिति के अनुरूप बनाने की आवश्यकता नहीं है। आपको इसे या उसे सही ठहराने की आवश्यकता नहीं है।

बहुत से लोग हैं जो कहेंगे आपको ऐसा करने की आवश्यकता है। आपको सुसमाचार को हमारी आज की संस्कृति के अनुरूप बनाने की आवश्यकता है।

और मैं आपको बताना चाहता हूँ। परमेश्वर का आत्मा 2,000 वर्षों से कार्यरत है और वह इसे अच्छी तरह जानता है और आज की हमारी संस्कृति में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसके बारे में परमेश्वर को सोचना पड़े कि, "ओह, यदि मैं ने इसके बारे में सोचा होता तो मैं सुसमाचार को बदल देता ताकि वे इक्कीसवीं सदी में इसका प्रचार कर सकें। मुझे खेद है कि मैंने तुम्हें अधर में लटका दिया।" उसने हमें अधर में नहीं छोड़ा है। उसने हमें सुसमाचार दिया है, रोमियों 1:16, जो *"हर एक विश्वास करने वाले के लिए उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।"*
अक्सर लोग सुसमाचार में कुछ जोड़ने के बारे में, सुसमाचार को बदलने के बारे में बात करेंगे ताकि उसे हमारी संस्कृति के अनुरूप बनाया जा सके, उसे अधिक प्रभावशाली बनाया जा सके। हमारी संस्कृति में लोग इसी शब्द का प्रयोग करते हैं, "प्रभावशाली।" हम सोचते हैं कि सुसमाचार को बदलने के द्वारा हम कुछ अच्छा कर रहे हैं। हम प्रचार में सुसमाचार को हटाकर उसकी जगह अपने स्वयं के शब्दों को रखकर परमेश्वर पर कोई अहसान नहीं कर रहे हैं। यह अहंकार है। यह आत्म–केन्द्रित अहंकार है। यह सम्पूर्ण बिन्दू से चूक जाता है।

बात आपके शब्दों के बारे में नहीं है, यह परमेश्वर के शब्दों के बारे में है, यह सुसमाचार के बारे में है और आप इस सुसमाचार की सामर्थ पर भरोसा कर सकते हैं। इसलिए इसे अच्छी तरह समझ लें और जान लें कि इस में सामर्थ है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यह आसान है। विरोधी इसके पीछे पड़ा है परन्तु यह इतना सरल है। यह सरल है। स्पष्ट रहें। सुसमाचार की सामर्थ पर भरोसा रखें।

दूसरा, मसीह–केन्द्रित रहें। इससे मेरा मतलब यह है। मसीह सुसमाचार का केन्द्र है। आप लोगों को सत्यों को गले लगाने के लिए नहीं बुला रहे हैं। यह इन धागों का खतरा है। आप लोगों को सत्यों को गले लगाने के लिए नहीं बुला रहे हैं। आप लोगों को एक व्यक्ति को गले लगाने के लिए बुला रहे हैं। क्या इसका कोई मतलब है? आप लोगों को अपना धर्म अपनाने के लिए नहीं बुला रहे हैं। आप लोगों को एक संबंध में अपनाए जाने के लिए बुला रहे हैं। आप लोगों को अपनी जीवनशैली और अपने विश्वासों का समर्थन करने के लिए नहीं बुला रहे हैं। आप लोगों को अपना जीवन यीशु को समर्पित करने के लिए बुला रहे हैं। इसलिए यीशु पर बल दें। लोगों को यीशु से भेंट की ओर संकेत दें। लोगों को यीशु से भेंट करने का संकेत देने के लिए आप जो कुछ कर सकते हैं वह करें।

निश्चय रखें और इससे मेरा मतलब यह है कि आत्मा के कार्य पर भरोसा रखें। आत्मा अच्छा है। परमेश्वर का आत्मा लोगों को अपनी ओर खींच सकता है। हम आराम से निष्क्रिय होकर नहीं बैठते हैं। हमें आत्मा द्वारा सुसमाचार की घोषणा करने के लिए बुलाया गया है और जब हम ऐसा करते हैं, जब हम सुसमाचार का प्रचार करते हैं, तो फिर आत्मा को उनके हृदयों को पूरी तरह बदलने दें। अपने लिए भी, इसे बनाने का प्रयास न करें।

इसे देखें। यह पुस्तक, *सोल विनिंग मेड इज़ी*। इसे न खरीदें! इस लेखक को देखें जो आत्मा जीतने की योजना के बारे में बात करता है। वह मसीहियों को सुसमाचार के विक्रेताओं के रूप में बताता है और वह कहता है–मैं झूठ नहीं कह रहा हूँ–"एक प्रशिक्षित सुसमाचारक अपने संभावित व्यक्ति को मसीह के निर्णय पर ला सकता है।

जब वह निश्चय और दक्षता के साथ उद्धार के बिन्दू की ओर बढ़ता है तो फिर वहाँ बीच का कोई आधार नहीं होता है। यह उसका वार्तालाप नियंत्रण है जो इसे संभव बनाता है। नियंत्रित वार्तालाप तकनीक सुसमाचार प्रचार में नई है और आत्माओं को जीतने में वास्तविक सफलता का प्रतिनिधित्व करती है।" वह आगे कहते हैं, "अपने संभावित से अकेले मिलो। और दृढ़ता से अपने हाथ को उसके कंधे या बाजू पर रखो और अर्द्ध–आज्ञा के स्वर में उससे कहो, 'मेरे साथ अपना सिर झुकाओ।' जब आप उससे सिर झुकाने के लिए कहते हैं और उसकी ओर न देखें परन्तु अपना सिर पहले झुकाएँ और आप चुपके से देखेंगे कि पहले वह सिर झुकाने में हिचकता है। फिर उसका विरोध बिखर जाता है और उसका सिर झुक जाता है। उसके कंधे पर रखे आपके हाथ को आराम का अनुभव होगा और आपको पता चल जाएगा जब उसका हृदय समर्पित करता है। पहली बार अपने सिर को झुकाना भयानक मनोवैज्ञानिक दबाव को उत्पन्न करता है।" भयानक मनोवैज्ञानिक दबाव।

मैं इससे जितना हो सके उतनी दूर भागना चाहता हूँ। इस तस्वीर में मैं सुसमाचार और मसीह के आत्मा की बड़ाई करना चाहता हूँ और आपको प्रोत्साहन देना चाहता हूँ।

आपको इसे निर्मित करने की आवश्यकता नहीं है कि आप किसी के साथ प्रार्थना करें और फिर उसके उद्धार पाने की घोषणा करें। यह आपका कार्य नहीं है। यह मेरा कार्य नहीं है। हम उद्धार का निश्चय नहीं देते हैं। यदि मेरे उद्धार का निश्चय आप पर निर्भर हो तो मैं बड़ी परेशानी में हूँ और यदि आपका उद्धार मुझ पर निर्भर है तो भी ऐसा ही होगा। इसलिए आत्मा पर निर्भर रहें और आत्मा इसके लिए

अच्छा है। यह उसका कार्य है। वह उद्धार का निश्चय देगा। वह इसे करेगा। आत्मा अच्छा है। इसलिए मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि सुसमाचार सुनाने की आपकी योग्यता आपकी विक्रय योग्यता पर निर्भर नहीं है। यह आत्मा पर, परमेश्वर के आत्मा पर निर्भर है। इसलिए आत्मा के कार्य पर भरोसा रखें। वह अच्छा है। वह अच्छा है। उस पर भरोसा रखें।

अतः व्यवहारिक रूप में, जब आप किसी से बात करते हैं, तो हाँ, उनसे अनुरोध करें कि, "यीशु की ओर फिरें, अब आप यीशु की ओर मुड़ सकते हैं, अब आप यीशु से प्रार्थना कर सकते हैं।" हाँ। या कह सकते हैं, "आप घर जाकर इन बातों के बारे में सोचें। खूबसूरती यह है कि आत्मा उनके साथ घर जाता है, जब वे आधी रात को उठते हैं, वहाँ आत्मा उनकी आँखों को सुसमाचार के लिए खोलता है। वह इसमें अच्छा है। परन्तु यह सुसमाचार की हमारी घोषणा के द्वारा होता है, अनुरोध के द्वारा, लेकिन आत्मा को अपना कार्य करने दें।

अन्तिम, सावधान रहें। हम किसी दूसरे के जीवन में अनन्त रूप से महत्वपूर्ण इस पल का दुरूपयोग नहीं करना चाहते। याद रखें लक्ष्य निर्णय नहीं हैं; लक्ष्य चेले हैं। लक्ष्य निर्णय करवाना नहीं है। हमने इस निर्णय को बनाया है। ठीक है तुम नरक जाने वाली कतार से हटने और स्वर्ग जाने वाली कतार में खड़े होने का निर्णय लो, और मैं ने ऐसा ही किया है और अब मैं ने उद्धार पा लिया है। यह मसीहियत नहीं है। यह बाइबल की मसीहियत नहीं है और यह सुसमाचार नहीं है। सुसमाचार चेले बनाने के बारे में है। किसी को इसमें से चलाना, कुछ लोग कह सकते हैं कि यह निष्क्रियता जैसा लगता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि आप उनके जीवन में कोई निवेश नहीं कर रहे हैं। नहीं, आप मसीह के आत्मा को उनके जीवन में कार्य करने

दे रहे हैं और उस सम्पूर्ण समय के दौरान उनके साथ रहें और अपना जीवन उनके लिए दें। चेले बनाना यही है और चेले बनाने का कार्य सुसमाचार की घोषणा से शुरू होता है।

नरक के बारे में बात करना...

नरक के बारे में बात करना, इस धागे में लाना, मैं आपको परमेश्वर के न्याय के बारे में नम्र भय के साथ बोलने का प्रोत्साहन देना चाहता हूँ। यदि हम अहंकार या श्रेष्ठता के साथ परमेश्वर के न्याय के बारे में बोलते हैं, तो हम सुसमाचार को काटते हैं। मेरी आशा है कि इस प्रचार में मैं ने किसी भी रीति से ऐसा नहीं किया है।

हम परमेश्वर के न्याय के बारे में उन लोगों के समान बोलते हैं जो अपने जीवन में मसीह के अनुग्रह के बिना स्वयं भी उसके अधीन होते। हम परमेश्वर के न्याय के बारे में इस प्रकार बात करते हैं जैसे कि हम नियाग्रा झरने पर खड़े हों और हम लगभग खाई में गिर पड़े कि किसी ने हाथ बढ़ाकर हमें पकड़ लिया और इस कारण यदि हम नीचे की ओर गिर नहीं रहे हैं तो इसका एकमात्र कारण यही है कि उसने हमें पकड़ा हुआ है। आप परमेश्वर के न्याय के बारे में इसी प्रकार बात करते हैं– नम्र भय के साथ। परमेश्वर के क्रोध के बारे में ईमानदार तरस के साथ बात करें, ईमानदार तरस के साथ। इसे बनाया नहीं जा सकता है।

स्वर्ग के बारे में बात करना...

स्वर्ग के बारे में बात करना, परमेश्वर के साथ होने की आशा के बारे में बात करने के प्रत्येक अवसर का फायदा उठाएँ। मैं इस पर बल देना चाहता हूँ, परमेश्वर के साथ होना, जब हम स्वर्ग के बारे में बात करते हैं, तो महलों की बात न करें। वस्तुओं की बात न करें। इसके बारे में बात न करें कि स्वर्ग में जाने के बाद आप जितना चाहें उतना गोल्फ खेल सकते हैं।

यह परमेश्वर का वासस्थान है। क्या हम परमेश्वर से अधिक गोल्फ को चाहते हैं? स्वर्ग में बारे में इस तरह बात न करें। स्वर्ग में संसार की सबसे महान वस्तुओं के होने की बात न करें। हम स्वर्ग को इस प्रकार देखते हैं, स्वर्ग के बारे में इस प्रकार बात करते हैं जैसे कि वहाँ वे सारी सर्वोत्तम सुविधाएँ उपलब्ध हों जो ये संसार दे सकता है। बहनो और भाइयो, स्वर्ग ऐसा स्थान है जहाँ इस संसार की सर्वोत्तम सुविधाएँ भी इस तथ्य की बराबरी नहीं कर सकती हैं कि हम परमेश्वर के साथ रह रहे हैं और हम उसके चेहरे को देखते हैं और वह हमारी आँखों से सारे आँसुओं को पोंछ देता है। जब आप स्वर्ग के बारे में बात करते हैं तो परमेश्वर के साथ रहने के बारे में बात करें।

उन अवसरों का लाभ उठाएँ और इस तथ्य के बारे में बात करने के प्रत्येक अवसर का लाभ उठाएँ कि मरना लाभ है। इसके बारे में हमने पिछल प्रचार में बात की थी। यह एक आश्चर्यजनक कथन है।

आपकी कलीसिया और अनन्तता की अनिवार्यता...

मैं चाहता हूँ आप मेरे साथ रोमियों 9 पर आएँ। हमने रोमियों 1–8 को देखने में समय व्यतीत किया है। हम इसे नहीं पा सकते जब तक हम रोमियों 9:1–5 को नहीं समझते हैं। मैं आपके लिए इस छोटे परिच्छे को पढ़ना चाहता हूँ और आपकी कलीसिया और अनन्तता की अनिवार्यता के लिए तीन आसान से सवाल पूछना चाहता हूँ। रोमियों 9:1, पौलुस लिखता है,

> *मैं मसीह में सच कहता हूँ, मैं झूठ नहीं बोल रहा और मेरा विवेक भी पवित्र आत्मा में गवाही देता है कि मुझे बड़ा शोक है, और मेरा मन सदा दुखता रहता है, क्योंकि मैं यहाँ तक चाहता था कि अपने भाइयों के लिए जो शरीर के भाव से मेरे कुटुम्बी हैं, स्वयं ही मसीह से शापित हो जाता। वे इस्राएली हैं, और लेपालकपन का अधिकार और महिमा और वाचाएँ और व्यवस्था और उपासना और प्रतिज्ञाएँ उन्हीं की हैं। पुरखे भी उन्हीं के हैं, और मसीह भी शरीर के भाव से उन्हीं में से हुआ। सब के ऊपर परम परमेश्वर युगानुयुग धन्य हो। आमीन।* (रोमियों 9:1–5).

क्या हमें लोगों की दशा का अहसास है?

आपके विश्वास के परिवार के लिए, आपके लिए तीन सवाल। पहला, <u>क्या हमें लोगों की दशा का अहसास है?</u> रोमियों 9 में पौलुस के शब्दों की पृष्ठभूमि को रोमियों 10 और अधिक स्पष्ट किया गया है। रोमियों 9, 10, 11 में वह इस्राएलियों, यहूदी लोगों के बारे में बात कर रहा है। रोमियों 10:1 में वह कहता है, *"हे भाइयो, मेरे मन की अभिलाषा और उनके लिए परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि वे उद्धार पाएँ। क्योंकि मैं उनकी गवाही देता हूँ कि उनको परमेश्वर के लिए धुन रहती है, परन्तु बुद्धिमानी के साथ नहीं। क्योंकि वे परमेश्वर की धार्मिकता से अनजान होकर, और अपनी*

धार्मिकता स्थापित करने का यत्न करके, परमेश्वर की धार्मिकता के अधीन न हुए। क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।" (रोमियों 10:1–4). पौलुस कह रहा है कि उन्होंने विश्वास नहीं किया है। बहुसंख्यक यहूदियों ने मसीह को अस्वीकार कर दिया था और रोमियों 8:38–39, रोमियों के 1–8 अध्यायों में सुसमाचार की तस्वीर के सबसे विजयी भाग, न स्वर्गदूत, न दुष्टात्माएँ, कुछ भी हमें इस अतुल्य प्रेम से अलग नहीं कर सकता। एक ही वचन में पौलुस इस विजय से विलाप पर आ जाता है। क्यों?

वह इसलिए विलाप करता है क्योंकि उसे अहसास होता है कि यदि रोमियों 1–8 सत्य है तो इसका अर्थ है कि यहूदी लोग, उसका परिवार मसीह से अलग हैं और यदि वे मसीह की ओर नहीं मुड़ते हैं तो वे सदा के लिए मसीह से अलग हो जायेंगे और इसी को महसूस करके वह विलाप करता है।

यह हमारे सामने इस सवाल को लाता है, "क्या हम रोमियों 1–8 पर विश्वास करते हैं?" मेरा मतलब है, क्या हम वास्तव में इस सुसमाचार पर विश्वास करते हैं? हम इसके बारे में बात करते हैं और इसके बारे में गीत गाते हैं। लेकिन क्या हमें विश्वास है कि यह सत्य है? यदि हम विश्वास करते हैं तो मेरे साथ इसके निहितार्थों पर विचार करें।

आज संसार में साढ़े छह–सात अरब लोग हैं। और सबसे अधिक उदार आँकड़े कहते हैं कि इस संख्या का एक तिहाई भी मसीही नहीं हैं और इनमें सांस्कृतिक मसीही, राजनैतिक मसीही, नामधारी मसीही, इत्यादि शामिल हैं, परन्तु एक बार मान लेते हैं कि इस एक तिहाई में से प्रत्येक व्यक्ति मसीह का चेला है। तो साढ़े चार

अरब लोग शेष बचते हैं जो आज परमेश्वर के न्याय के अधीन हैं और वे सदा के लिए नरक में जायेंगे। सदा के लिए, और उनमें से एक अरब ने कभी सुसमाचार के बारे में सुना ही नहीं है।

बहनो और भाइयो, आने वाले दिनों में हमें अत्यधिक विशाल परिवर्तन करने की आवश्यकता है। मैं जानता हूँ, मैं जानता हूँ कि इससे आप असहज हो जाते हैं। यह मुझे असहज बनाता है। इसका मतलब यह है कि हम कलीसिया के बारे में अपने विचारों को बदलने वाले हैं।

कुछ लोग कह सकते हैं, "अभी जैसे चल रहा है उसमें क्या समस्या है? क्या गलत है?" साढ़े चार अरब लोग नरक की ओर जा रहे हैं। यही गलत है। जबकि हम व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से अपने जीवनों और अपने समय और अपने धन और अपने संसाधनों को अपने आप पर खर्च कर रहे हैं। यदि हम इस पर विश्वास करते हैं तो ऐसा कैसे हो सकता है? यदि साढ़े चार अरब लोग नरक की ओर जा रहे हैं, तो मेरे मन में या मेरे दिमाग में कभी यह सवाल कैसे आ सकता है कि मेरा और मेरे परिवार का क्या होगा? यह संभव नहीं है। इसका कोई मतलब नहीं है।

विशेषतः वे हजारों लोग जो हमारे चारों ओर के समुदायों में हैं। क्या हमें इस बात पर विश्वास है, क्या वास्तव में हम विश्वास करते हैं कि जिन लोगों के साथ हम नौकरी करते हैं, जिन लोगों के पड़ोस में हम रहते हैं, जिन लोगों के साथ हम प्रतिदिन शहर में मिलते हैं, वे लोग यदि मसीह को नहीं जानते हैं तो वे अपना अनन्तकाल पीड़ा में बितायेंगे जहाँ उनकी पीड़ा का धुआँ सदा के लिए उठता रहेगा। क्या हम इस पर विश्वास करते हैं?

हम में से कुछ लोग विश्वास नहीं करते हैं। कुछ लोग, मैं जानता हूँ कि कुछ लोग इसके सत्य होने पर विश्वास नहीं कर सकते हैं, जो मैं कह रहा हूँ उस पर विश्वास नहीं कर सकते हैं। यहीं पर वह सवाल आता है। कौन इस पर विश्वास करता है? क्या हम इस पर विश्वास करते हैं? क्योंकि यदि हम विश्वास करते हैं, यदि हम विश्वास करते हैं कि लोग अनन्त पीड़ा की ओर बढ़ रहे हैं, तो फिर अब कलीसियाओं के संसाधनों से खेल खेलने का समय नहीं रहा है।

मुझे नहीं पता यह कैसा है। आप नहीं जानते यह कैसा है परन्तु हम उपवास और प्रार्थना करनी है और परमेश्वर के आत्मा से कहना है कि वह हमें, मुझे, हमें आत्म–केन्द्रित धार्मिक प्राथमिकताओं से अलग करे। मुझे नहीं पता यह कैसा होगा। हमें अपने मुँह के बल गिरकर उससे इसे करने के लिए कहना होगा। क्या हमें लोगों की दशा का अहसास है? यदि हाँ तो हमें इस बिन्दू पर अपने मुँह के बल गिरना है।

क्या हमारे अन्दर मसीह का हृदय है?

दूसरा सवालः क्या हमारे अन्दर मसीह का हृदय है? क्या आपने इसे सुना जो पौलुस ने रोमियों 9 में कहा था? पूरे पवित्रशास्त्र में यह सर्वाधिक अविश्वसनीय कथनों में से एक है। मुझे नहीं पता कि इस पर कैसे प्रचार करूँ, इसे कैसे अभिव्यक्त करूँ, यह कथन कि खोए हुओं की खातिर मैं स्वयं ही मसीह के लिए शापित ठहरता। शापित ठहरना, परमेश्वर के क्रोध के अधीन होना; जैसे कि पौलुस कह रहा है, और वह मसीह और परमेश्वर के आत्मा को बुलाता है और कहता है, "वे मेरी इस सच्चाई की गवाही देते हैं। मैं इसे बना नहीं रहा हूँ। मैं कुछ करने हेतु

तुम्हें खींचने के लिए भावनाओं को बना नहीं रहा हूँ। यह मेरे अन्दर की सच्चाई है।" पौलुस ने कहा ऐसा नहीं हो सकता है परन्तु वह कहता है, "मेरी कामना है कि मैं स्वयं ही शापित हो जाता।" यह कुछ ऐसा है जैसे क पौलुस अनन्त दण्ड के मुहाने पर खड़ा होकर कहता है, "मैं इसी समय कूदने वाला हूँ ताकि तुम्हें जीवन मिल सके। मैं अपने आप को परमेश्वर के क्रोध के अधीन कर दूँगा।"

और हम सोचते हैं कि शायद, शायद अपने बच्चों के लिए हम ऐसा कह सकते हैं। तो हमारे साथ नौकरी करने वालों का क्या होगा? हमारे शहर के दूसरे लोगों का क्या होगा? इसे न भूलें कि पौलुस उन लोगों के बारे में यह कह रहा है जो उसे सता रहे थे, जो उसे कैद कर रहे थे और उसे पत्थरवाह कर रहे थे और पीट रहे थे। क्या आप अनन्त दण्ड के मुहाने पर खड़े होकर मध्य–पूर्व के उग्रवादी समूहों से कह सकते हैं कि मैं इसी समय तुम्हारे उद्धार के लिए कूद जाऊँगा? क्या हम यह कह सकते हैं?

आप ऐसा कैसे कह सकते हैं? हम खोए हुओं के प्रति बोझ के बारे में सहजता से बोलते हैं। यह खोए हुओं के प्रति बोझ है। यह न कहें कि मुझ में खोए हुओं के लिए बोझ है। इसे हल्के में न लें। आप में ऐसा बोझ कैसे आता है? वही विचार, गलातियों 3:13. यीशु हमारे लिए क्या बन गया? वह हमारे लिए शाप बन गया। वही विचार। यीशु ने परमेश्वर का क्या सहा? पाप के प्रति परमेश्वर का क्रोध, रोमियों 9 में इसे आप केवल तभी कह सकते हैं जब आपके अन्दर वैसा हृदय हो और इसलिए हमारे विश्वास के परिवार के सामने सवाल यह है कि क्या हमारे अन्दर मसीह का हृदय है? उससे भी गहरा, क्या हम मसीह के हृदय को चाहते हैं?

इस सवाल का जवाब देने से पहले, यह विचार करें कि यह मार्ग किस ओर ले जाता है। आप मसीह के हृदय को माँगते हैं और सुसमाचार के लिए कष्ट सहना और अपने प्राण देना और सब कुछ त्यागना स्वाभाविक बन जाता है। धनवान युवा, तुम्हारे पास जो है उसे बेच दो। कंगालों को दे दो। तब तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा। धनवान व्यक्ति के लिए यह कठिन है, एक धनवान कलीसिया के लिए स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। आप मसीह का हृदय माँगते हैं और वह सब कुछ बदल देता है। क्या हम मसीह के हृदय को चाहते हैं? क्या हमें पता है कि इसका मतलब क्या होगा?

क्या हम चाहते हैं कि हमारे जीवन सफल हों?

अन्त में यह तीसर सवाल पर लाता है, क्या हमें लोगों की दशा का अहसास है, क्या हमारे अन्दर मसीह का हृदय है, और क्या हम चाहते हैं कि हमारे जीवन सफल हों? क्या हम चाहते हैं कि हमारे जीवन सफल हों? इससे न चूकें, पौलुस इसे कुरिन्थ में लिख रहा है, रोमियों की पुस्तक को कुरिन्थ में लिख रहा है। वह यरूशलेम की ओर जा रहा है, और उसे बताया गया है, इस पुस्तक को लिखने के बाद उसे बताया जाएगा, "यरूशलेम में मत जा क्योंकि वहाँ तुझे बन्दीगृह में डाल दिया जाएगा, तुझे गिरफ्तार कर लिया जाएगा, तुझे वहाँ सताया जाएगा। वहाँ मत जा।" पौलुस कहता है, "मुझे परवाह नहीं है।" प्रेरितों के काम 20–21, "मुझे इसकी चिन्ता नहीं है। प्रभु यीशु के नाम के लिए मैं न केवल बाँधे जाने बल्कि मरने के लिए भी तैयार हूँ।" पौलुस कहता है, "मेरा जीवन यहाँ के लिए नहीं है।" मित्र उससे यरूशलेम न जाने का अनुरोध कर रहे हैं। वह कहता है, "मेरा जीवन यहाँ के लिए नहीं है।" प्रेरितों के काम 20:22–24 में वह कहता है, "परन्तु मैं अपने प्राण को कुछ नहीं समझता कि उसे प्रिय जानूँ, वरन् यह कि मैं अपनी दौड़ को और

उस सेवा को पूरी करूँ, जो मैं ने परमेश्वर के अनुग्रह के सुसमाचार पर गवाही देने के लिए प्रभु यीशु से पाई है।"

अब मेरे साथ इसके बारे में सोचें। यह अनन्तता की अनिवार्यता है। सबसे छोटे बालक के लिए इस पृथ्वी पर ज्यादा से ज्यादा 80–90 वर्ष शेष हैं, केवल 80–90 वर्ष, जिसके बाद लाखों, करोड़ों, अरबों और खरबों वर्षों का एक अनन्त समय आने वाला है। हम में से कौन है जो आज से सौ खरब वर्ष बाद पीछे की ओर देखकर सोचेगा, "काश, मैं ने अधिक धन कमाया होता। काश, मैं ने अधिक वस्तुएँ इकट्ठी की होती। काश, मेरे पास एक अच्छा घर होता। काश, मेरे पास अच्छे वस्त्र होते। काश, मैं ने अधिक आराम से जीवन बिताया होता। काश, मैं अधिक सतर्कता से खतरे से दूर रहता।"

नहीं, हम पीछे की ओर मुड़ेंगे और देखेंगे कि हमारा जीवन किसी काम का नहीं था क्योंकि केवल एक ही बात का महत्व था, केवल एक ही बात का, और वह था जातियों में सुसमाचार को फैलाना क्योंकि आज से खरबों वर्ष बाद हम हर जाति और हर भाषा और हर गोत्र के ऐसी बड़ी भीड़ से घिरे होंगे जिसे कोई गिन नहीं सकता और उस समय इस बात का कोई महत्व नहीं होगा कि हमारा घर कितना बड़ा था और हमारे वस्त्र कितने अच्छे थे और हमारा जीवन कितना आरामदायक था क्योंकि हम उन लोगों के साथ होंगे जो अनन्त दण्ड की बजाय अनन्त आनन्द का अनुभव कर रहे होंगे। यह इसके योग्य है। इसके लिए हमारा जीवन दिया जा सकता है। यह कैसा होगा? परमेश्वर हमें दिखाता है कि यह कैसा होगा? परमेश्वर हमारी सहायता करे कि हम अनन्त के प्रकाश में अपने जीवनों को अपनी कलीसिया को व्यर्थ न गँवा दें।

और मसीह के पास जाकर, मसीह के सामने गिरकर मैं इस सम्पूर्ण श्रंखला को समाप्त करना चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि आप व्यक्तिगत रूप से, पारिवारिक रूप से, एक साथ मिलकर, जहाँ कहीं आप हैं, वहीं पर प्रार्थना करें। मैं चाहता हूँ कि हम मसीह के पास जाएँ क्योंकि हम रोमियों 9 को अपने ह्रदयों में बना नहीं सकते हैं। हम इसे अपने जीवनों में बना नहीं सकते हैं। हमें नहीं पता यह कैसा होगा। हमें जरूरत है कि मसीह इसे हमारे अन्दर करे और मैं चाहता हूँ कि आप और आपकी कलीसिया मसीह की ओर दौड़े और उससे पूछे, "हमें अपना ह्रदय दें, हम जो कह रहे हैं उन बातों के यथार्थ को समझने में हमारी सहायता करें, लोगों की दशा को समझने में हमारी सहायता करें, और परमेश्वर हमारे सहायता करें कि हमारे जीवन सफल हो सकें।"